वैदिक युग में धर्म एवं समाज : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. राखी रानी

धर्म का अर्थ वस्तुओं के तत्वों को समन्वित रखने की शक्ति और क्रिया है। ऋग्वैदिक आर्यो ने सम्पूर्ण विश्व में एक ही विश्व–व्यवस्था की कल्पना की थी, जिसे उन्होंने 'ऋत्' कहा है। 'ऋत्' ही धर्म का ऋग्वैदिक स्वरूप है। इस विश्व– व्यवस्था के नियामक को उन्होंने 'वरूण' कहा है। उससे प्रार्थना की गई है कि यदि हम अपने मित्रों, अतिथियों, बंधु–बांधवों या परिवार के सदस्यों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नही करें तो वरूण हमें दण्ड दें। यदि हमने भूल से भी किसी को धोखा दिया है तो हमें मुक्त करें। ऋग्वेद में ही अन्यत्र 'धर्म' का प्रयोग विश्व को धारण करने के अर्थ में हुआ है। स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक काल में धर्म या ऋत् का मुख्य उद्देश्य समाज में सुव्यवस्था स्थापित करना था।